श्री भीमाकालीजी मन्दिर सराहन में गाए जाने वाले भक्ति लोकगीतों का सांगीतिक अध्ययन

Rajesh Kumar
Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

भिन्न–भिन्न रूपों में प्रकट होने वाली आदि शक्ति मॉ का एक रूप भगवती भीमाकाली के नाम से प्रसिद्ध है, जिनका सुविख्यात पावन धाम सराहन नामक स्थान पर स्थित है। हिमाचल प्रदेश के शिमला ज़िले की रामपुर तहसील के अन्तर्गत बशल कण्डा, थारलू धार, एवं किंगणी धार आदि पर्वतीय ढलानों की तलहटी में स्थित अनुपम सांस्कृतिक वैभव और प्राकृतिक सौन्दर्य से सुसज्जित सराहन, प्रदेश का एक महत्वपूर्ण गांव है। यहां से 7–8 किलोमीटर की दूरी पर नीचे गहराई में बहती सतलुज नदी के दांयी ओर सराहन के ठीक सामने समुद्र तल से 18,500 फीट से भी अधिक उॅचाई तक उठी श्रीखंड महादेव पर्वत–श्रृंखला का भव्य दर्शन भी इसके गौरव को अलौकिक छवि प्रदान करता है। 'शिमला से 184 किलोमीटर भीमाकाली सराहन वास्तुकला की दृष्टि से अदभुत शिल्प का उदाहरण है। रामपुर से यह तीर्थ स्थल 44 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। हिन्दुस्तान–तिब्बत राष्ट्रीय उच्च मार्ग संख्या–22 पर ज्यूरी नामक स्थान से सराहन के लिए सम्पर्क सड़क जाती है जिसकी कुल लम्बाई 17 किलोमीटर है। रामपुर बुशहर जितनी पुरानी रियासत है उससे भी कहीं प्राचीन है इस रियासत का शैल, जो कि भूगर्भवेताओं के मत में एक अरब 80 करोड़ वर्ष का है, जो कभी पृथ्वी के भीतर 20 किलोमीटर नीचे था। यह राज्य पूरे किन्नर देश तक फैला था। कैलाश को किन्नर देश माना जाता है। माना जाता है कि लगभग छः हजार वर्ष पूर्व शोणितपुर जिसे वर्तमान में सराहन कहा जाता है, बाणासुर की राजधानी हुआा करती थी। बाणासुर, भक्त प्रह्लाद के पौत्र, राजा बली के सौ पुत्रों में सबसे बडा था। बाणासुर ने हिरमा नामक राक्षसी से जबरदस्ती विवाह कर लिया था। सुंगरा गांव के पास एक गुफा हैं। विवाहोपरांत बाणासुर कई सालों तक हिरमा के साथ वहां रहा और उनके अठारह पुत्र–पुत्रियां हुए। किन्नौर के प्रमुख अठारह देवता बाणासुर और हिरमा की संतान माने जाते हैं।

सराहन एक प्रमुख शक्ति केन्द्र रहा है तथा 17वीं शताब्दी तक यह स्थान बुशहर रियासत की राजधानी रहा है। यहां का भीमाकाली मन्दिर पहाड़ी स्थापत्य शैली में बनी एक भव्य इमारत है जिसका निर्माण तत्कालीन राजा बुशहर द्वारा करवाया गया था ऐसा माना जाता है। सराहन में देवी की स्थापना कब की गई इस सम्बंध में निश्चित कुछ नहीं कहा जा सकता है परन्तु विभिन्न घटनाओं

को दृष्टिगत रखते हुए इस स्थान का सम्बंध लगभग 2500–3000 वर्ष पूर्व जोड़ा जा सकता है। भीमाकाली की वर्तमान में पूजित अष्ट धातु की मूर्ति मन्दिर परिसर में आज से लगभग 150–200 वर्ष पूर्व स्थापित की गई थी। सराहन से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित ''गमसोट की गुफा'' में इस मूर्ति का निर्माण किया गया था। मूर्ति की ऊंचाई लगभग चार फुट है। भीमाकाली की उस मूर्ति के साथ ही दोनों तरफ अन्य कई छोटी मूर्तियां रखी गई हैं। जिनमें ब्रजेश्वरी, अन्नपूर्णा, गणेश, शिव–पार्वती तथा गौतम बुद्ध की मुर्तियां प्रमुख हैं। भीमाकाली के यहां पर दो मन्दिर बनाए गए हैं। प्राचीन मन्दिर कुछ टेढ़ा हो गया है। प्राचीन मन्दिर के साथ ही एक चार मन्जिला मन्दिर का निर्माण किया गया है। इस मन्दिर का निर्माण भी पहाड़ी शैली में ही किया गया है तथा इसकी एक मन्जिल भूमिगत भी है। नए मन्दिर में 1962 को देवी की स्थापना की गई है। स्थानीय लोगों के अनुसार देवी की मूल प्रतिमा अब भी पुराने मन्दिर में ही रखी गई है तथा विशेष अवसरों पर ही वहां राज परिवार के सदस्यों द्वारा देवी की पूजा–अर्चना होती है। आम लोग इस प्रतिमा के दर्शन नहीं कर सकते हैं।

श्री भीमाकालीजी की स्तुति में गाए जाने वाले कुछ भक्ति लोकगीत

हिमाचल प्रदेश के साधारण दैनिक जीवन में लोक–संगीत का बहुत अधिक महत्व है। यहां के लोकगीतों में देवी–देवताओं, वीरों की वीरता, राजाओं तथा प्रेमी–प्रेमिकाओं के कार्य–कलापों तथा हर्ष वेदना का वर्णन मिलता हैं, विभिन्न धार्मिक व सामाजिक अवसरों पर उसी के अनुसार जन्म से लेकर मृत्यु तक लोकगीतों की रचना की गई हैं। इन लोकगीतों के साथ यहॉ के विभिन्न लोक वाद्यों का वादन किया जाता है। जैसे–शहनाई, ढोल, नगारा, करनाल, नरसिंगा इत्यादि। जब लोक भाषा तथा लोक तालों में निबद्ध रचना में किसी देवी या देवता की महिमा का गुणगान किया जाता है तो वह भक्ति लोकगीत कहलाती है।

प्रसिद्ध शक्तिपीठ 'श्री भीमाकालीजी मन्दिर सराहन' में भी हिमाचल प्रदेश के अन्य शक्ति पीठों की ही तरह विभिन्न पर्वों को बड़ी श्रद्धा और धूमधाम से मनाया जाता है। प्राचीन काल में तारारात्रि, शिवरात्रि, कालरात्रि व महारात्रि पर्व विशेष रूप से और अनिवार्य रूप से तान्त्रिक विधि–विधान से मनाए जाते थे। इन सभी पर्वों में देवी की पूजा व स्तुति के लिए संगीत का विशेष महत्व रहता था। पूर्व कथित चार विशेष पर्वों के अतिरिक्त बूढ़ी दिवाली भी मनाई जाती है। बूढ़ी दिवाली प्रत्येक क्षेत्र में निर्धारित तिथि के दिन ही यहां मनाई जाती है। इसके अतिरिक्त सराहन में तीन दिन तक चलने वाला दशहरा समारोह भी कुल्लू दशहरे की तरह ही भव्य रूप से मनाया जाता है। इस अवसर पर दूर–दूर से देवता अपनी–अपनी पालकियों में देवकर्मियों के साथ साथ आते हैं। रघुनाथ जी को रथ में बिठाकर षोभायात्रा भी निकाली जाती है। इस अवसर पर लगातार तीन दिनों तक मन्दिर परिसर में

सांस्कृतिक तथा भक्तिमय माहौल बना रहता है। स्थानीय महिलायें तथा पुरूष पंडाल में एकत्रित होकर पूरी–पूरी रात देवी की आराधना भक्ति लोक रचनाओं तथा पारम्परिक वाद्य यन्त्रों पर बजनें वाली लोक धुनों पर एक दूसरे का हाथ पकड़ कर गोलाकार में नाच–गा कर करते है। इन भक्ति रचनाओं में देवी की महिमा का बख़ान किया जाता है।

भीमाकाली सराहणीए तेरी जय–जय, जै कारा,
बीच तेरा मन्दिर माईए ओरा–पोरा बजारा।
केसरा रा तिलक लान्दे, गोले़ फुलुए हारा,
दूरो–दूरो का यातरू आं, कोरो जै–जै कारा।
उशटे तेरे मन्दिरा माईए, लाल धजा झूला,
तेरे ऐऊ नांव जोपयो, पापिए पापा धुला।

प्रस्तुत लोक भक्ति रचना में सराहन की भीमाकाली मां की महिमा का गुणगान किया गया है। इसमें बताया गया है कि देवी का मन्दिर बाजार के मध्य में स्थित है। देवी की सुन्दरता का बख़ान करते हुए कहा गया है कि मैया ने माथे में केसर का तिलक तथा गले मे फूलों का हार लगाया हुआ है। भक्त जन दूर–दूर से चढाईयां चढ़ कर माता के दर्शन के लिए आते हैं तथा मातारानी सभी के कष्टों को दूर कर देती है। यदि इस रचना को शास्त्रीय दृष्टि से देखा जाएं तो इस रचना में ''साध़प़, सारेग, पग'' आदि स्वर समूहों से राग भूपाली की छाया दृष्टिगोचर होती है। यह रचना भक्ति रस से ओत–प्रोत है। इसे आठ मात्रा की नाटी ताल में निबद्ध किया गया है। नाटी ताल कहरवा ताल का ही एक प्रकार है किन्तु इस ताल को लोक वाद्यों पर बजाया जाता है जिसके कारण इसकी चाल तथा बोल भिन्न होते है। इस ताल को 'नगारा' नामक पारम्परिक वाद्य यन्त्र पर बजाया जाता है।

स्थायी			**(मध्य लय)**				
ध़	स	रेग	रे	रे	ग	रे	साध़प़
भी	मा	काली	स	रा	णि	ए	तेऽरी
प़	ध़	साग	रे	रे	रे	गरे	साध़
ज	य	जय	जै	का	रा	ऽऽ	ऽऽ
अन्तरा							
ध़	सा	रे	ग	रे	रे	रे	ग
बी	च	ते	रा	म	न	दि	रो
रे	सा	ध़	प़	प़	ध़	सा	रे

मा	ई	ए	ऽ	ओ	रा	पो	रा
रे	–	सा	–	सा	–	गरे	साध़
ब	ऽ	जा	ऽ	रा	ऽ	ऽऽ	ऽऽ

"भीमाकाली यातरू तेरे आये"

भीमाकाली यातरू तेरे आए, भीमाकाली तेरे मन्दिरे आए।
हाथ में घड़वी गंगाजल वाली, चरण धुलाने आए, मां चरण धुलाने।
घिस–घिस चंदन भरी है कटौरी, तिलक लगाने आए।
चुन–चुन कलियां मैं हार पिरौवां, हार पहनाने आए।
हाथ में थाली भोगा वाली, भोग लगाने आए।
किन्ने–किन्ने मैया तेरा भवन बनाया, किन्ने चंवर झुलाया मां।
जुगे–जुगे जीवे मेरे सराहना रा राजा, जिने तेरा भवन बनाया मां।

प्रस्तुत रचना को किसी राग विशेष में रखना उचित नहीं होगा फिर भी, कल्याण वाचक स्वर समूहों का प्रयोग के कारण इसे कल्याण थाट के अन्तर्गत रखना ही उचित होगा। इस रचना में भीमादेवी मन्दिर का निर्माण करने वाले राजा की प्रशंसा कर उसके चिर–जीवन की कामना की गई है। इनके अतिरिक्त भक्तों द्वारा भिन्न–भिन्न विधियों जैसे–मैया के चरण धुलाकर, तिलक लगाकर, हार पहनाकर, भोग लगाकर, चंवर झुलाकर आदि माता को प्रसन्न करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इस रचना को आठ मात्रा की नाटी ताल में निबद्ध किया गया है। यह रचना भी भक्ति रस का ही आभास कराती है।

स्थायी (मध्य लय)

						पध़	सारे
						भीमा	काली
ग	रे	सा	गरे	रे	रे	पध़	सारे
या	त	रू	तेरे	आ	ए	भीमा	काली
ग	रे	सा	रेसा	सा	सा		
या	त	रू	तेरे	आ	ए		

अन्तरा

						पप	प
						हाथ	में
मप	धप	गग	रेसा	रे	ग	ग–	ग
घड़	वी ऽ	गंगा	जल	वा	ली	चर	ण
रे	सा	रे	ध़	सा	सा	पध़	सारे
धु	ला	णे	ऽ	आ	ए	भीमा	काली

"जय माता जय माता"

जय माता जय माता, जय माता जय माता।।
तोड़ा लागा घराटा का माईए, उबी खोड़ी चढ़ाई,
कोई आणौ पान सुपारी, कोई आणौ कढ़ाई।
किजुआ री मूरता माईए, किजुए घनैरो,
सुनयारी मूरतों माईए, चांदी ओ घनैरो।
औरू तेरो मन्दिरो, पौरू लांकड़ेरा कुंआ,
जुण कारो मानता माईए, आशा पूरी होंआ।
हुंदी तेरे सराहणा माईए, उबे हिआरे कांडे,
तेरे कोरो मानता माईए, कुल्लू शिमला माण्डे।
तेरे ओ मन्दिरा माईए, रघुनाथा स्थानो,
पूरे कोरे आशा माईए, तौले दुनियां मानो।

प्रस्तुत लोक भक्ति रचना में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि, मन्दिर तक पहुंचने के लिए खड़ी चढाई लगती है जो कि इस भक्ति गीत की प्राचीनता का प्रमाण है क्योंकि वर्तमान में मन्दिर परिसर तक सड़क निर्मित है। देवी के दर्शन करने भक्त–जन दूर–दूर से आते हैं तथा देवी को पान–सुपारी, ध्वजा–नारियल आदि भेंट करते हैं। मन्दिर में देवी की सोने–चांदी की मूर्तियां स्थापित हैं जो इसकी भव्यता का प्रमाण है। मन्दिर परिसर में स्थापित लांकड़ावीर तथा भगवान रघुनाथ के मन्दिरों के बारे में भी इस रचना में वर्णन मिलता है। इस लोक भक्ति रचना में राग देस की छाया दृष्टिगोचर होती है। इसे आठ मात्रा की ढीली नाटी ताल में निबद्ध किया गया है। इस रचना में हमें नाटी ताल का एक अन्य प्रकार देखने को मिलता है। इसकी चाल, विभाग तथा बोल बिल्कुल भिन्न है। इस ताल को 'नरगा' वाद्य पर बजाया जाता है जो 'नागारा' वाद्य का ही छोटा रूप है। इसके दो नगारे की ही तरह दो भाग दांया तथा बांया होते हैं।

स्थायी (मध्य लय)

सा	रे	म	ग	ग–	रे	सा	नी़
ज	य	मा	ता	जय	मा	ता	ऽ
नी़–	सा	ग	–	ग	रे	सा	स
जय	मा	ता	ऽ	ज	य	मा	ता

अन्तरा

ग	ग	म	ग	रेसा	रे	रे	सा
तो	ड़ा	ला	गा	घऽ	रा	टो	का
नी़	सा	रे	ग	ग	म	ग	ग
मा	ई	ए	उ	बी	खो	ड़ी	ऽ
रे	सा	सा	–	ग	ग	म	ग

च	ढा	ई	ऽ	को	ई	आणौं	ऽ
रेसा	रे	रे	सा	नि़	सा	रे	ग
पा ऽ	ऽ	न	सु	पा	री	को	ई
ग	म	ग	ग	रे	सा	सा	–
आ	णौं	क	ऽ	ड़ा	ऽ	ई	ऽ

उपसंहार

प्रसिद्ध शक्तिपीठ श्री भीमाकालीजी मन्दिर सराहन में गाए जाने वाले पारम्परिक भक्ति लोकगीतों का सांगीतिक दृष्टि से अध्ययन करने पर मैंने पाया कि, इन रचनाओं का निर्माण वर्षों पहले हुआ तथा इन रचनाओं का रचनाकार कोई संगीत शास्त्री नहीं रहा है, परन्तु उसके बावजूद भी ये रचनाएं अपने में शास्त्रीयता को समेटे हुए हैं। इन रचनाओं को बड़ी ही दक्षता के साथ छंद तथा लयबद्ध किया गया हैं। इन भक्ति लोकगीतों को जब पारम्परिक वाद्य यंत्रो के साथ लयबद्ध कर गाया–बजाया जाता है तो अनायास ही उपस्थित जन–मानस के पांव थिरकने लगते है। इस शोध के माध्यम से मालूम हुआ कि लोक तालें भी शास्त्रीय तालों का ही परिवर्तित रूप हैं। इन भक्ति लोकगीतों को किसी विशेष राग को आधार मान कर नहीं रचा गया है फिर भी इन गीतों पर किसी न किसी राग की छाया दृष्टिगोचर होती है।

संदर्भ

सुदर्शन वशिष्ठ, हिमालय गाथा, देव परम्परा, पृ॰310, सुहानी बुक्स, गणेशनगर, दिल्ली–2007

एस.के.बी.एस.नेगी, श्री भीमाकालीजी मन्दिर समूह,पृ॰21, श्री भीमाकालीजी एवं अन्य मन्दिर समूह रामपुर बुशहर–2005

एस.आर.हरनोट, यात्रा,किन्नौर,स्पिति,लाहुल और मणिमहेश, पृ॰37, मिनर्वा बुक हाऊस, शिमला–1994

एस.आर.हरनोट, हिमाचल के मन्दिर व उनसे जुड़ी लोक कथाएं, पृ॰264, मिनर्वा बुक हाऊस, शिमला

नागेन्द्र शर्मा, हिमालय का उतरांचल रामपुर बुशहर, पृ॰57, बलीभद्र प्रकाशन रामपुर–1996

शशिबाला जी से साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी।

लोक कलाकारों से साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी।